This question paper contains 4+1 printed pages]

HPAS (Main)—2017

SANSKRIT

Paper I

Time : 3 Hours *Maximum Marks :* 100

Note :— Question Nos. **1-3** may be answered either in Sanskrit or in the medium of examination opted by the candidate.

सूचना :—**1-3** प्रश्नाः संस्कृतमाध्यमेन अथवा अभ्यर्थिना परीक्षार्थं चयनितेन मध्यमेन उत्तरितुं शक्याः।

1. (*a*) Disjoin the following *padas* quoting relevant Sutras : 10

अधस्तनेषु पदेषु सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिविच्छेदः कार्यः –

मध्वरिः, गव्यूतिः, देवैश्वर्यम्, मनोरथः।

(*b*) Indicate the case-ending in the following underlined words : 10

अधः प्रदत्तेषु रेखाङ्कितपदेषु सूत्रोल्लेखपुरस्सरं विभक्ति-निर्देशो विधेयः –

<u>हरिं</u> भजति, <u>पितृभ्यः</u> स्वधा, <u>कटे</u> आस्ते, <u>विप्राय</u> गां ददाति।

Or

(अथवा)

(*a*) Indicating the name of compound in the following words explain their dissolution : 10

अधःप्रदत्तेषु पदेषु समासनाम उल्लिख्य तत्र विग्रहः प्रदर्शनीयः —

अधिहरि, शङ्कुलाखण्डः, अब्राह्मणः, हरिहरौ।

(*b*) Change the following sentences into active or passive voice as applicable : 10

अधोङ्कितवाक्यानि कर्मवाच्येऽथवा कर्तृवाच्ये प्रयोगानुकूलं परिवर्तनं कुर्वन्तुः —

रामः गृहं गच्छति, देवदत्तेन पाठं पठ्यते, अध्यापकेन पाठ्यते, सोहनः शोभनम् अभिनयं करोति।

2. What is the contribution of Valmiki Ramayan to development of Sanskrit literature. 20

संस्कृत साहित्यस्य विकासयात्रायां वाल्मीकिरामायणस्य कियत् योगदानं सोदाहरणं विवेच्यताम्।

Or

(अथवा)

Evaluate the contribution made by Indian scholars to the field of linguistic studies specially the theory of origin of languages.

भाषाया उत्पत्तिविषये भारतीयमनीषिणां सैद्धान्तिकमतानि तेषां योगदानं च प्रतिपाद्यताम्।

3. Give a brief account of the development of Sanskrit dramas and determine the importance of the Uttararāmcharitam. 20

संस्कृतनाट्यविकासक्रमस्य संक्षिप्तं विवरणं दत्वा तत्र उत्तरराम-चरितस्य वैशिष्ट्यं निर्धारयत।

Or

(अथवा)

Explain the importance of Purushārtha-chatushtaya and Varnās'ramavyavasthā in Indian culture.

भारतीयसंस्कृतौ पुरुषार्थचतुष्टयवर्णाश्रमव्यवस्थायाश्च वैशिष्ट्यं प्रतिपाद्यताम्।

4. Translate the following passage into Sanskrit : 20

अधोऽङ्कितगद्यांशस्य संस्कृतानुवादो विधेयः —

शिक्षक के अर्थ में गुरु शब्द छान्दोग्य उपनिषद् के पूर्व नहीं था। महाभारत में गुरु शब्द अनेक स्थलों में मिलता है। स्मृतियाँ तीन प्रकार के गुरुओं का उल्लेख करती हैं—गुरु, आचार्य एवं उपाध्याय। जो सभी अनुष्ठानों को पूर्ण कर वेद की शिक्षा देता था वह गुरु कहलाता था। आचार्य वह होता था जो उपनयन कर वेद की शिक्षा देता था। मनु के अनुसार आचार्य उपाध्याय से दस गुणा आदरणीय होता है। गौतम का मत है कि गुरुओं में श्रेष्ठ आचार्य अच्छे व्यवहार और धर्म के सार की शिक्षा शिष्य को देता था। गुरुपद को परिवर्तित करते हुए मुण्डकोपनिषद् कहता है कि शिक्षक को क्षत्रिय होना चाहिए, उसे ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिए।

Or

(अथवा)

It has been a moot point among the Gita's scholars whether it supports the idea of war and violence or attempts to promote the values of peace and non-violence. The opinion of scholars on this point is divided in two diametrically opposite camps. One school of scholar is

firmly of the opinion that the primary objective of the Gita teaching is to motivate Arjuna, who was despondent, to fight in the battlefield of Kurukshetra. On the other hand, there are scholars who believe that the main message of the Gita has been one of piece and non-violence.

5. Write a short essay in your own Sanskrit on the following topic : 20

अधोऽङ्कितविषयम् अवलम्ब्य अनतिदीर्घं स्वसंस्कृते निर्मितम् एकं निबन्धं लिख्यताम्—

संस्कृतिः संस्कृताश्रया:।

Or

(अथवा)

षोडश् संस्काराणां महत्त्वम्।